वर्ष 3, अंक 7, जुलाई 2019 आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक
जे 7 श्रीरामनगर रायपुर (छ.ग.) CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

गरमी गई. बारिश आयी. और स्कूल भी खुल गए. नई पुस्तकें, नए शिक्षक और नए मित्र. खेलने-कूदने का मज़ा और नई बातें सीखने का भी.

आप सभी बारिश के मज़े तो लेंगे ही, परन्तु बारिश के मौसम में अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी बहुत ज़रूरी है. खान-पान में सफाई का ध्यान न रखें तो बीमार होने का खतरा है. अपने स्कूल के शिक्षकों से वर्शा ऋतु में ध्यान रखने वाली चीज़ों के बारे मे ज़रूर पूछना.

किलोल के लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. सभी बच्चों को ढ़ेर सा प्यार.

आलोक शुक्ला

<u>कर्तव्य</u>

लेखिका - पद्यमनी साहू

गर्मी की छुट्टियां लग गई थीं. काव्या व रुद्र बहुत खुश थे. दोनो रात में दादा जी के पास जाते और कहानियां सुनते. दोनो एक दिन ज़िद करने लगे कि दादा जी हम भी आपके साथ शाम को टहलने जायेंगे. दादा जी ने हामी भर दी.

काव्या व रुद्र रोज दादा जी के साथ पार्क जाने लगे. वहां सभी उम्र के बहुत सारे लोग जाते थे. कोई तेजी से चलता तो कोई दौड़ लगाता कोई योग तो कोई व्ययाम करता. एक दिन पार्क जाते समय दादा जी ने कहा कि हम सब आज हरे रंग के कपडे पहन कर जायेंगे. काव्या व रुद्र हरे रंग के कपड़े पहन कर आ गये. मन मे बड़ी जिज्ञासा थी कि हमने हरे रंग के कपड़े क्यो पहने हैं.

पार्क पहुँच कर दोनों ने देखा कि सभी हरे रंग के कपड़े पहने हुए हैं. सभी के हाथ मे एक एक पौधा है. दादा जी भी पास की पौधों की दुकान से एक नीम का पौधा ले आये. काव्या ने बड़ी उत्सुकता से पूछा कि दादा जी आज कोई खास दिन है क्या? सभी पौधा लेकर क्यो आये हैं? दादा जी ने बताया कि आज विश्व पर्यावरण दिवस है. इसलिए आज के दिन को यादगार बनाने के लिए हम सब पौधा लगाना चाहते हैं. रुद्र ने पूछा दादा जी पर्यावरण दिवस क्यो मनाया जाता है. दादा जी ने बताया कि इस दिन हम अपने पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों पर चर्चा करते हैं व अपने पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेकर पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हैं. इसके बाद पार्क के आस पास खाली जगहों पर सभी पौधा रोपण करने लगे.

काव्या और रुद्र ने कहा दादा जी ये पौधा हम अपने हाथों से लगाना चाहते हैं. यह सुन दादा जी को बहुत खुशी हुई. काव्या व रुद्र ने दादा जी को विश्वास दिलाया कि वे प्रति वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस और अपने जन्मदिन पर पौधे जरूर लगाएंगे और पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्य का पालन जरूर करेगें.

तो आओ बच्चो काव्या और रुद्र के जैसे हम भी अपने कर्तव्य को निभाये विश्व पर्यावरण दिवस के दिन पेड़ लगाएं.

लेख - भोरमदेव - छत्तीसगढ़ के खजुराहो

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

हमर देश में छत्तीसगढ़ के अलग पहिचान हे. इंहा के संस्कृति, रिती रिवाज, भाखा बोली, मंदिर देवाला, तीरथ धाम, नदियां नरवा, जंगल पहाड़ सबके अलगे पहिचान हे.

हमर छत्तीसगढ़ में कोनों चीज के कमी नइहे। फेर एकर सही उपयोग करे के जरुरत हे. इंहा के पर्यटन स्थल मन ल विकसित करे के जरुरत हे. बहुत अकन पर्यटन स्थल के विकास अभी भी नइ होहे. जब तक सरकार ह एकर ऊपर धियान नइ दिही तब तक एकर विकास नइ हो सके.

कबीरधाम जिला में एक जगा हे भोरमदेव. एला छत्तीसगढ़ के खजुराहो भी कहे जाथे. काबर कि जइसे खजुराहो के मंदिर में चित्रकला उकेरे गेहे ओइसने चित्रकला इंहा के मंदिर में भी देखे बर मिलथे.

भोरमदेव ह कवर्धा से 17 कि. मी. दूर घना जंगल के बीच में स्थापित हे. इंहा जाय बर पक्की सड़क बन गेहे अऊ मोटर गाड़ी के बेवस्था घलो हे. आजकाल जंगल भी कटा गेहे त जंगली जानवर के उतना डर नइहे.

पहिली के सियान मन बताथे कि भोरमदेव के तीर में जाय बर आदमी मन डर्राय. काबर कि उंहा घनघोर जंगल रिहिसे अऊ जंगली जानवर शेर भालू के डेरा रिहिसे. अब मनखे के आना जाना बाढ़गे अऊ जंगल ह कटागे त जानवर मन के भी अता पता नइ चले.

प्राचीन मंदिर - भोरमदेव मंदिर ह बहुत प्राचीन मंदिर हरे. मंदिर के अंदर में शिवलिंग स्थापित हे. इंहा के मूरतीकला अऊ सुंदरता ह देशभर में प्रसिध्द हे. एहा जैन, वैष्णव, शैव सबो मत के आदमी के तीरथधाम हरे. इंहा सब परकार के मूरती लगे हुए हे. ये मंदिर ल नागवंशी राजा देवराय ह 11 वीं सताब्दी में बनवाय रिहिसे.

भोरमदेव नाम कइसे परीस - भोरमदेव नाम के पीछे कहे जाथे कि गोंड राजा मन के देवता शिवजी हरे, जेला बूढ़ादेव, बड़े देव अऊ भोरमदेव भी कहे जाथे. एकरे सेती एकर नाम भोरमदेव परीस.

कला शैली - मंदिर के मुंहू पूर्व दिशा के डाहर हे. ए मंदिर ह नागर शैली के सुंदर उदाहरन हरे. मंदिर में तीन तरफ से प्रवेश करे जा सकथे. एला पांच फूट ऊंचा

चबूतरा में बनाय गेहे. अइसने मंदिर बहुत कम देखे बर मिलथे. मंडप के लंबाई ह 60 फूट अऊ चौड़ाई ह 40 फूट हे. मंडप के बीच में चार खंभा अऊ किनारे में 12 खंभा बनाय गेहे. जेहा मंदिर के छत ल सम्हाल के रखे हे। सब खंभा में बहुत ही सुंदर चित्र बनाय गेहे. मंडप में लक्ष्मी विष्णु अऊ गरुड़ के मूरती रखे गेहे. भगवान के धियान में बइठे एक राजपुरुस के मूरती भी रखे हुए हे.

गर्भगृह - मंदिर के गर्भगृह में बहुत अकन मूरती रखे गेहे अऊ एकर बीच में शिवलिंग स्थापित करे गेहे. पंचमुखी नाग अऊ गनेस जी के मूरती भी रखाय हे.

बाहरी दीवार - मंदिर के चारो डाहर बाहरी दीवार में शिव, चामुंडा, गणेश, लक्ष्मी, विष्णु, वामन अवतार आदि के मूरती लगे हुए हे.

मड़वा महल - भोरमदेव मंदिर से एक किलोमीटर के धुरिहा में एक ठन अऊ शिव मंदिर हे जेला मड़वा महल या दूल्हा देव मंदिर के नाम से जाने जाथे. ए मंदिर के निरमान ल 1349 ई. में फनी नागवंशी शासक राजा रामचंद्र देव करवाय रिहिसे. कहे जाथे ए मंदिर के निरमान ल अपन बिहाव के उपलक्छ में करवाय रिहिसे. माने ओकर बिहाव ह इही जगा में होय रिहिसे. मड़वा के मतलब होथे मंडप. जेला बिहाव के समय में बनाय जाथे. स्थानीय बोली में एला मड़वा कहे जाथे. एकरे पाय एला मड़वा महल के नाम से जाने जाथे. मड़वा महल के बाहरी दीवार में 54 ठन कामसूत्र के मूरती उकेरे गेहे. एकर माध्यम से समाज में स्थापित गृहस्थ जीवन के अंतरंगता ल दरसाय गेहे.

<u>छेरकी महल</u> - भोरमदेव मंदिर के दक्षिण पश्चिम दिशा में एक किलोमीटर के धुरिहा में एक अऊ मंदिर हे जेला छेरकी महल के नाम से जाने जाथे. ए मंदिर के

निरमान भी फनी नागवंशी राजा के शासन काल में होहे. अइसे बताय जाथे कि ए मंदिर के निरमान ल बकरी चरवाहा मन के लिये बनाय गे रिहिसे. ताकि बकरी चरात चरात इंहा बइठ के सुरता सके. छत्तीसगढ़ी में बकरी ल छेरी कहे जाथे. एकरे पाय ए महल के नाम छेरकी महल परे हे.

भोरमदेव महोत्सव - भोरमदेव के विकास करे बर सरकार ह हर संभव प्रयास करत हे. इंहा के सुंदरता ल बढ़ाय खातिर अऊ पर्यटक मन ल आकरसित करे बर चैत मास में भोरमदेव महोत्सव के भी आयोजन करे जाथे. जेमे छत्तीसगढ़ अऊ बाहिर के कलाकार मन ह आके अपन कला के प्रदर्शन करथे.

आवासीय सुविधा - इंहा पर्यटक मन के लिए रुके के भी बेवस्था करे गेहे. लोक निरमान विभाग ह विसराम घर भी बनाहे ।जिला मुख्यालय कवर्धा में भी विसराम घर, होटल अऊ लाज के बेवस्था हे.

पहुंचे के रास्ता - भोरमदेव रायपुर से 135 किलोमीटर के दूरी में हे. दुरुग भिलाई से भी लगभग ओतकीच धुरिहा परही. इंहा जाय बर पक्की सड़क अऊ यात्री बस के सुविधा हे.

<u>नवाचार विभिन्न संज्ञानात्मक गतिविधियां</u>

लेखिका एवं चित्र - नेहा पैगवार

बच्चों के साथ इस वर्ष शैक्षणिक कार्यक्रम जिसमें बच्चों के सीखने की क्षमता का पता लगाकर उनकी उपस्थिती के लिए हर माह में पुरस्कृत करना, हर विषय वस्तु की गतिविधि में बच्चों की सहभागिता, पालकों से नित संपर्क में रहकर उनसे बच्चों के विषय में बातचीत एवं बच्चों की पढ़ाई में ढेर सारी सहायक साम्रगी का प्रयोग करते हुए मेरे व्दारा कार्य किया जा रहा है. प्रस्तुत हैं इससे संबंधित कुछ चित्र -

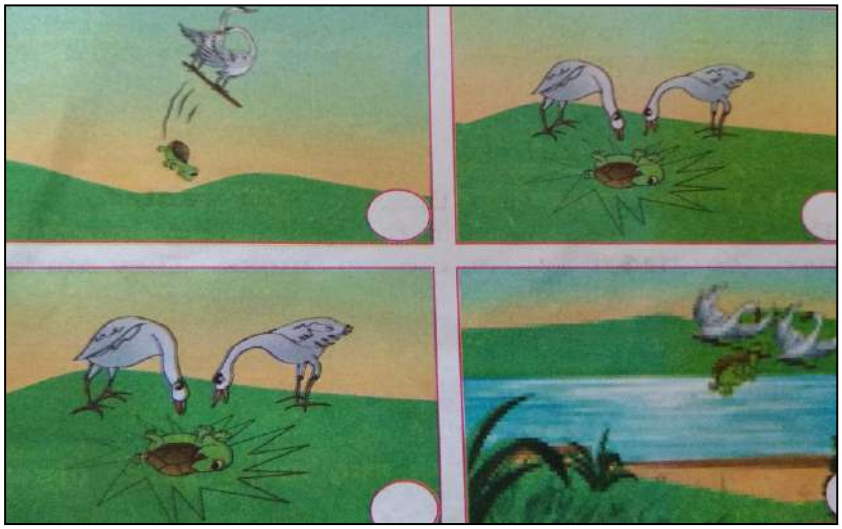

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

अधूरी कहानी - जादूई कछुआ

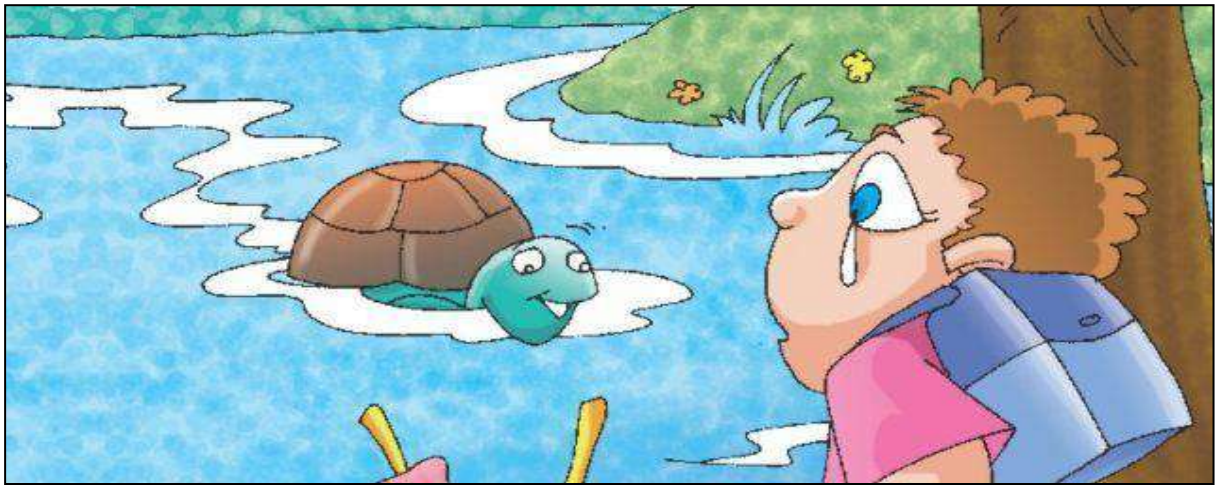

सर्दियों की दोपहर में एक छोटा लड़का तालाब के पास नीम के पेड़ के नीचे बैठा था. वह लड़का बहुत उदास था. नदी के पानी को देखते-देखते उसकी आँखों में मोटे-मोटे आंसू आने लगे. अचानक उसने देखा कि एक कछुआ तैरता हुआ उसके पास आ रहा था. वह कछुआ धीरे-धीरे तैर रहा था.

जब वह कछुआ तालाब के किनारे पहुचा, तब तक छोटे लडके ने रोना बंद कर दिया था. लडके ने कछुए से कहा - "तुम कैसे हो? आज मेरी अध्यापिका ने मुझे मेरी रिपोर्ट कार्ड दिया. मैंने अच्छी पढाई नही की इसलिये मेरा रिज़ल्ट भी बहुत गंदा आया है. मेरी माँ मेरे रिज़ल्ट को देखकर बहुत दुखी होगी. शायद वह मुझसे गुस्सा भी हो जायेगी. अब मै क्या करूं"

कछुआ लडके की बात ऐसे सुनने लगा जैसे उसे सब कुछ समझ आ रहा हो. लड़के ने आगे कहा "अगर मै अपने नम्बर ना बताऊं तो मेरी माँ उदास नही होगी. हां मै यही करूंगा." लड़का अपनी समस्या का हल सोचकर संतुष्ट हुआ. उसके चेहरे पर थोड़ी हंसी आ गयी. वह खड़ा हुआ और घर जाने के लिए तैयार हो गया. तभी उसे कछुए की आवाज सुनाई दी -

इन्द्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी

कछुये ने उसे रुकने को कहा. वह लड़का रुका तब कछुये ने कहा - 'तुम्हारी बातों से तो लगता है कि तुम अपनी माँ से बहुत प्यार करते हो. उसे उदास नही देख सकते.' लड़के ने हामी भरते हुए कहा - 'जी हाँ मैं अपनी माँ को उदास नही देख सकता.' तब कछुये ने कहा ज़रा सोचो, अगर तुम अपनी माँ से झूठ बोलोगे, और यदि उसे सच्चाई पता चली तो वह और भी दुखी होगी. वह तो तुमसे और भी ज्यादा नाराज़ होगी. क्यों न तुम अपनी माँ को सब सच बता दो और उसे विश्वाश दिलाओ कि अगली बार और ज़्यादा मेहनत करोगे. तुम्हारी माँ भी तुमसे बहुत प्यार करती है. वह यह सच जानकर तुम्हें कुछ नही कहेगी. उसके लिये तुम्हारे अंक मायने नही रखते तुम्हारा विश्वास मायने रखता है.

लड़के ने कछुये की बात को ध्यान से सुना और कहा - 'मित्र तुमने सच कहा. थोड़े समय के लिये डर के कारण मैं मार्ग से भटक गया था पर तुमने मुझमे आत्मविश्वास जगाया. अब चाहे जो भी हो मैं माँ को सच ही बताऊंगा और अगली बार अच्छे अंक लाकर माँ को खुश कर दूँगा. उसके बाद वह लड़का घर चला गया.

उसने अपनी माँ को सब कुछ सच-सच बताया. माँ ने अपने लाल को कुछ नही कहा, बल्कि प्यार से गले लगाया और आशीर्वाद दिया.

संदेश - मित्रो इस समय परीक्षा परिणाम का समय चल रहा है. कम अंक पाने वाले छात्र उदास न हों और कुछ भी गलत कार्य न करें, क्योंकि माता पिता के लिये आपका विश्वास ही सब कुछ है. साथ ही ऐसे छात्रों को हतोत्साहित न करें बल्कि उनके लिये जादुई कछुआ बनकर उनको प्रोत्साहित करें.

नेहा पैगवार व्दारा पूरी की गई कहानी

तभी कछुए की आवाज सुनाई दी. कछुए ने कहा – 'रुक जाओ. तुम्हारी इस समस्या का समाधान मैं कर सकता हूं.' लड़के ने बोला - 'कृपया बताएं.' कछुए ने कहा - 'तुम अपने रिपोर्ट कार्ड की सच्चाई मां को जाकर बता दो.' तब लड़के ने बोला - 'नहीं मां बहुत उदास एवं दुखी होंगी. मेरी मां मुझे बहुत प्यार करती हैं. मैं उन्हें नाराज नहीं कर सकता.'

तब जादुई कछुए ने कहा - 'ठीक है, पर तुमने पढ़ाई की होती तो मां से झूठ कहने व नाराज करने की जरूरत नहीं पड़ती. लड़के ने कहा - 'काश! मैं अच्छे से पढ़ता तो मेरा रिपोर्ट कार्ड खराब नहीं आता. मां मुझ पर बहुत भरोसा करतीं हैं. उनके अलावा मेरा कोई नहीं.'

कछुए को लड़के की बात सुनकर दया आ गई. उसने लड़के से कहा - 'उदास न हो बच्चे. अगर तुम मुझे अगली बार थोड़ा-थोड़ा, धीरे-धीरे रोज पढ़कर अच्छे नंबर लाकर दिखाओगे, तो मैं अभी तुम्हारे रिपोर्ट कार्ड को अपने जादू से अच्छा बना सकता हूं.' लड़का खुश होकर बोला - 'मैं वादा करता हूं. अच्छे से मेहनत करूँगा. आखिरी परीक्षा मे बहुत अच्छे नंबर लाऊँगा.' कछुए ने वादा लिया कि स्कूल मे वह अपने साथियों और शिक्षक का साथ लेगा. निरंतर प्रयास करेगा. उसने वादा

किया. बोला - 'रोज मैं पढ़ाई करूँगा और एक घंटे इस तालाब के किनारे आकर पढूंगा.' फिर जादू से कछुए ने रिपोर्ट कार्ड अच्छा नंबर वाला बना दिया. फिर लड़का घर चला गया. मां को रिपोर्ट कार्ड दिखाया. मां बहुत खुश हुई परंतु लड़का मन ही मन लज्जित महसूस कर रहा था.

उसने ठानी-अब से रोज अच्छे से पढ़ेगा. वह नित मेहनत करने लगा. अब आखिरी परीक्षा भी हो गई. परिणाम का दिन आया. परिणाम के एक दिन पूर्व वह तालाब के किनारे उदास बैठा था. कछुए ने कहा - 'अब क्या हुआ.' लड़का बोला - 'कल परिणाम आने वाला है. कहीं रिपोर्ट कार्ड खराब आया तो मैं.....'
तब जादुई कछुए ने बोला - 'देखो! तुमने अपनी पिछली गलती को भूलकर आगे निरंतर मेहनत की है. तुम अवश्य ही अच्छे नंबर लाओगे. मुझे पूर्ण भरोसा है.'

जब अगले दिन वह रिपोर्ट कार्ड लेने गया तो सभी उसे बधाई देने लगे. शिक्षक ने कहा- 'तुमने कक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त किया है. अब तुम ऐसे ही निरंतर प्रयास करते रहना.' खुशी से वह फूला नहीं समा रहा था.

वह रिपोर्ट कार्ड लेकर सीधे कछुए के पास गया. लड़के की आंखों मे खुशी के आंसू थे. उसने कछुए को बताया कि उसने प्रथम स्थान प्राप्त किया है. 'अगर तुमने मेरी समय पर आंखें न खोली होती एवं साथ न दिया होता तो मै आज अच्छे नंबर न ला पाता. बहुत-बहुत धन्यवाद.' कछुए ने कहा - 'तुम बहुत मेहनती व अच्छे बच्चे हो. तुम हमेशा मेहनत करना, आगे बढ़ना.' ऐसा कहकर कछुआ हमेशा के लिए वहां से चला गया. लड़के ने मां को पूरी बात बताई. मां बहुत खुश हुई. बोली - 'बेटा, अपनी स्वयं की मेहनत से कोई भी आगे बढ़ सकता है. तुमने मुझे झूठा रिपोर्ट कार्ड दिखाया था, परंतु उस कछुए ने सही मार्गदर्शन दिया तो तुम आज सफल हुए. याद रखना झूठ कुछ समय के लिए सुख दे सकता है, परंतु ईमानदारी और मेहनत से किया गया कार्य सफलता एवं स्थायी खुशी और आत्मसंतुष्टि प्रदान करता है.' बच्चे ने मां को गले से लगा लिया.

सीख- मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है. देर से ही सही पर ईमानदारी, धैर्यपूर्वक, लगन से किया गया कार्य हमेशा सफलता का मार्ग सुनिश्चित करता है.

अगले अंक के लिये इस मज़ेदार कहानी को पूरा करके हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

अधूरी कहानी - कबूतर और बहेलिया

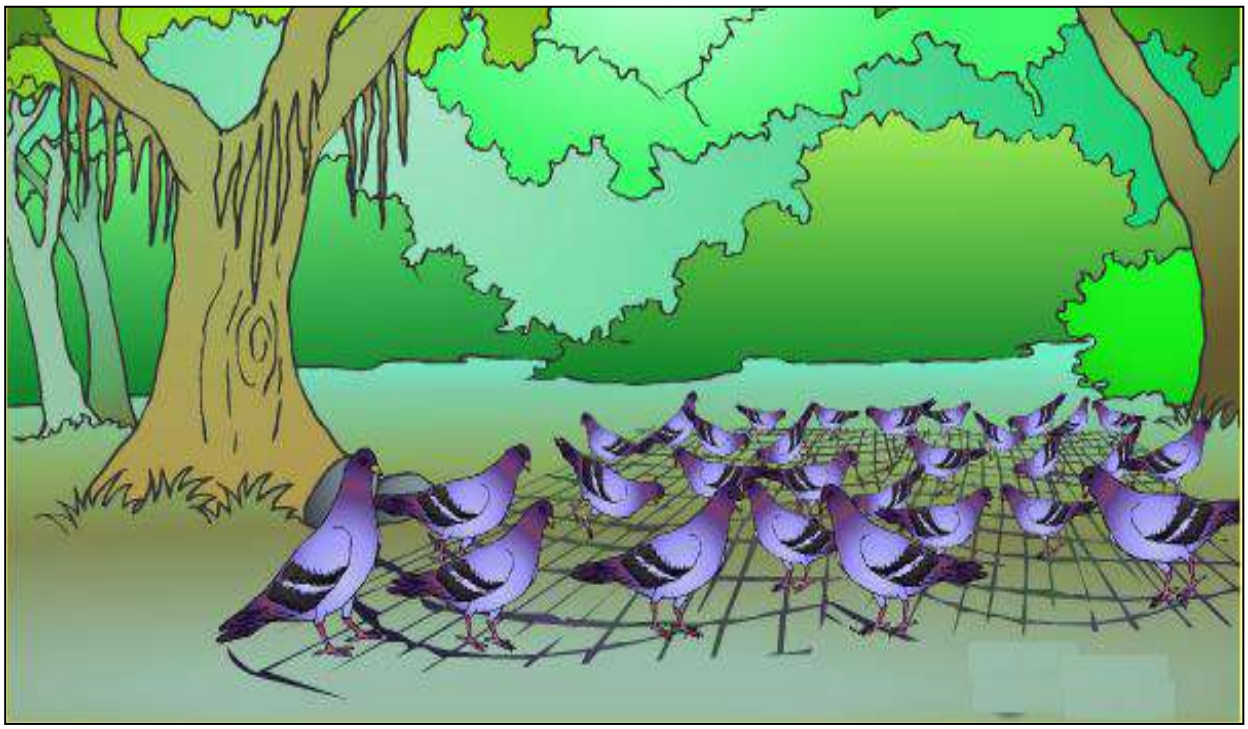

जंगल में एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ था। उस पर तरह-तरह के पक्षी रहते थे। एक दिन एक बहेलिए ने आकर उस पेड़ के नीचे अपना जाल फैला दिया और दाने डालकर स्वयं उस विशाल पेड़ के पीछे छिपकर बैठ गया।

कुछ समय बाद उधर से कबूतरों का एक झुंड आता दिखाई दिया। बहेलिए की खुशी का ठिकाना न रहा। धीरे-धीरे सारे कबूतर दानों के लालच में आकर उस स्थान पर बैठ गए, जहां पर जाल बिछा हुआ था।

कुछ समय बाद सभी कबूतर बहेलिए के बिछाए जाल में फँस गये। कबूतरों में उनका राजा चित्रग्रीव भी था। दूर से बहेलिए को आता देख चित्रग्रीव ने कहा, "मित्रों यह हमारे लिए संकट की घड़ी है। किन्तु हमें घबराना नहीं चाहिए। संकट की इस घडी का हमें मिलकर मुकाबला करना चाहिए। तभी इस संकट से छुटकारा मिल सकता है।

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कई मज़ेदार कहानियां मिली हैं. उनमें से दो को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

लालच

लेखक - इन्द्रभान सिंह कंवर

एक बार चार मित्र थे जो कि सफ़र पर जा रहे थे. रास्ते में उन्हें भूख लगने लगी. उन्हें अचानक एक आम का पेड़ दिखाई पड़ा जिस पर कुछ फ़ल लगे हुए थे. चारों ने उसे देखकर राहत की सांस ली और आम तोड़ने का उपाय सोचने लगे. डण्डे

तथा पत्थर की तलाश इधर उधर करने लगे. तभी उसमें से एक मित्र जो थोडा लालची था वह लालच में आकर चुपचाप झट-पट पेड़ पर चढ़ा. उसने सभी आम तोड़कर अपने पास रख लिये.

जब बाँकी तीन मित्र वापस आये तब उन्होने देखा की पेड़ पर एक भी फ़ल नही है. उन्होने पेड़ पर चढे हुए अपने मित्र को देखा जिसके पास सभी फ़ल रखे हुए थे. तीनो ने उससे खाने के लिये फ़ल माँगे मगर उसने यह कहकर देने से मना कर दिया कि उसने बड़ी मेहनत से पेड़ पर चढ़कर इन फ़लो को तोड़ा है.

अब तीनो मित्र निराश होकर वहा से चलने लगे. चौथा मित्र भी पेड़ पर से नीचे उतरने की कोशिश करने लगा. लालच वश वह पेड़ पर चढ़ तो गया था मगर वह अब नीचे नही उतर पा रहा था. वह काफ़ी परेशानी में था. अब उसने अपने तीनो मित्रों को आवाज लगाई जो कुछ ही दूर गये थे. तीनो ने उसकी आवाज सुनी पर रुके नहीं आगे चलते रहे. एक मित्र ने कहा चलो हम उसकी मदद करते हैं आखिर वह हमारा मित्र है.

फ़िर तीनो ने वापस आकर उसकी मदद कर उसे पेड़ से नीचे उतारा. अब उस लालची मित्र को अपने व्यवहार पर बड़ा पछतावा हो रहा था. उसने तीनो मित्र से अपने कृत्य पर माफ़ी माँगी और कहा मैने तुम लोगों के साथ इतना बुरा किया मगर फ़िर भी तुम लोगो ने मेरी मदद की. तब तीनो मित्र ने कहा सच्चा मित्र वही होता है जो मुसीबत में काम आये. हम लोग भी तो आपस में मित्र ही हैं. फ़िर उन चारों ने मिलकर आम खाये, गले मिले और अपने सफ़र पर पुनः आगे चल पड़े.

सीख - हमें लालच में पड़कर किसी का अहित नही करना चाहिये. वास्तव में सच्चा मित्र वही होता है जो मुसीबत में काम आये.

अमरइया

लेखिका - आशा उज्जैनी

स्कूलों में गर्मी की छुट्टियां हो गई थीं. सभी बच्चों की तरह नमन भी बहुत खुश था. वह अपने पापा के साथ गांव जा रहा था. उसे अपने दादा-दादी के पास गांव जाकर छुट्टियां बिताना बहुत अच्छा लगता था. गांव में उसके कई दोस्त भी बन गए थे. वह उनके साथ खेलता, साइकिल चलाता और तालाब में तैरने जाता था. गांव में एक अमरइया (आम का बगीचा) थी. वहां बहुत सारे आम के पेड़ थे. नमन और उसके दोस्त घूमने जाते तो उनका मन आम खाने को करता था. वहां की रखवाली एक माली करता था जो किसी को अंदर नहीं आने देता था. नमन के दोसतों ने उसे बताया कि गर्मी की छुट्टियों के लिये उन्हें एक प्रोजक्ट कार्य दिया गया है जिसमें उन्हें किसी नर्सरी या बगीचे का सर्वे करना है. उन्हें जानकारी लेनी है कि बगीचे में किस प्रकार के पेड़ हैं, उन्हें कैसे उगाया जाता है, उनमें कौन से फल लगते हैं, पेड़ों की देखभाल कैसे करनी है आदि.

इसी से नमन को एक उपाय सूझा. उसने अपने दादाजी को बताया कि आजकल गांव के स्कूलों में भी शहर की तरह प्रोजेक्ट वर्क दिया जाता है. मुझे और मेरे दोस्तों को आपकी मदद की आवश्यकता है. वह दादाजी को लेकर अपने दोस्तों के साथ अमरइया गया. दादाजी ने माली से बात करके उन सबको अमरइया के अंदर जाने की अनुमति दिला दी. माली ने उनको आम का बगीचा घुमाया और प्रोजैक्ट

बनाने में उनकी मदद की. माली ने उनके प्रश्नों के उत्तर भी दिए. इसके बाद उनसे उन्हें आम खाने को दिए. सबने माली को धन्यवाद दिया. दादाजी को बच्चों का यह कार्य बहुत अच्छा लगा. अब गर्मी छट्टियां समाप्त होने वाली हैं और नमन दादा-दादी के साथ गुज़ारे समय की यादों को संजोये अपने पापा के साथ शहर वापस जा रहा है, इस यकीन के साथ कि अगले साल छुट्टियों में वह फिर गांव आयेगा.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

कला - मां मुझे भी पढ़ना है आत्मनिर्भर बनना है

अनामिका पाण्डे का चित्र

21 जून विश्व योग दिवस पर विशेष

लेखक – सुवर्णा साहू

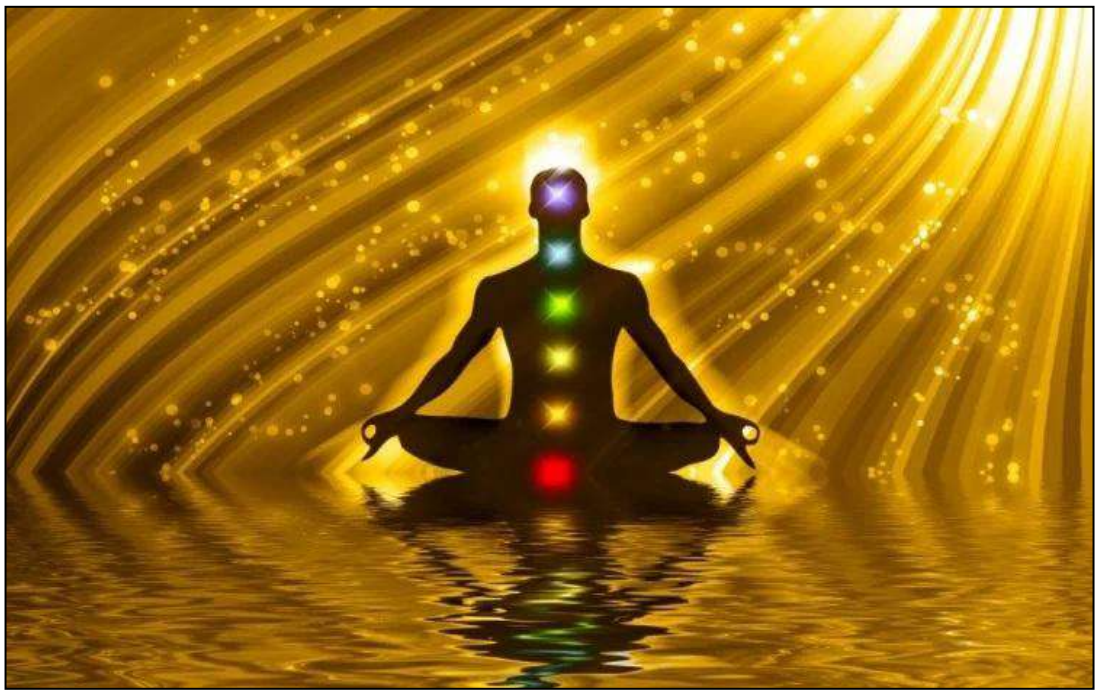

योग:- योग का अर्थ है 'जोड़ना'. किसी भी अच्छी आदत या क्रियाकलाप को स्वयं से जोड़कर आत्मसात् करना ही योग है.

उपनिषद् में चार प्रकार के योग कहे गए हैं, जिनमें से एक 'राजयोग' है. इसी के एक हिस्से 'अष्टांग योग' का वर्णन, महर्षि पतंजलि ने अपनी पुस्तक 'योग सूत्र' में किया है जो वर्तमान में जन साधारण के योगाभ्यास के लिए प्रेरणास्रोत है.

अष्टांग योग अर्थात् आठ प्रकार के योग हैं - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि. जो व्यक्ति इनको अपने जीवन में पूर्णतः अपनाता है वह परम मोक्ष की प्राप्ति करता है.

आसन, प्राणायाम और ध्यान, योग के ही हिस्से हैं और इन्हीं तीनों का सम्मिलित स्वरूप ही वर्तमान में योगाभ्यास के रूप में जाना जाता है.

आसन - तनावरहित और अधिक समय तक सुविधाजनक शारीरिक मुद्रा या अवस्था को ही 'आसन' कहा जाता है. आसन मांसपेशियों, जोड़ों, हृदय तंत्र प्रणाली, नाड़ियों तथा ग्रंथियों के साथ-साथ मन, मस्तिष्क और चक्रों (ऊर्जा केन्द्रों) के लिए भी बहुत लाभदायक होते हैं. अनेक आसनों के नाम पशुओं की सहज गतिविधि और स्थितियों से प्रेरित हैं जो प्राकृतिक रूप से स्वस्थ और सक्रिय रहने में उनकी सहायता करते हैं, जैसे - भुजंगासन, शशकासन, मार्जरी आसन आदि. आसन खड़े होकर, बैठकर तथा लेटकर (पीठ तथा पेट के बल) किए जाते हैं. आसनों में श्वास - प्रश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. उथली श्वास ना लेकर गहरी श्वास लाभदायक होती है जिसमें पेट के फूलने और पिचकने का अनुभव हो. कसरत के विपरीत आसनों का अभ्यास धीरे-धीरे किया जाता है जिससे व्यक्ति की संपूर्ण कायिक अवस्था में गहराई से ऊर्जा का संचार होता है और एकाग्रता, सचेतनता में वृद्धि होती है.

प्राणायाम - अर्थात् 'प्राण+आयाम' प्राण अर्थात् 'जीवन शक्ति' तथा आयाम अर्थात् 'विस्तार' या 'फैलाव'. श्वास के माध्यम से प्राण ऊर्जा को शरीर के कण-कण तक पहुंचाना ही प्राणायाम है. प्राणायाम में तीन मुख्य क्रियाएँ होती हैं :-

1) पूरक - नियंत्रित गति से श्वास अंदर लेना

2) कुंभक - अंदर ली हुई श्वास को क्षमता अनुसार रोक कर रखना

3) रेचक - रोकी हुई श्वास को नियंत्रित गति से छोड़ना

इन तीनों क्रियाओं का अच्छी तरह से अभ्यास करने के बाद अन्य प्राणायमों का अभ्यास बढ़ाना चाहिए. अनुलोम-विलोम, भस्त्रिका, कपालभाति, भ्रामरी आदि सभी प्राणायाम, कुछ सहज आसनों जैसे- वज्रासन, सुखासन, पद्मासन आदि में बैठ कर किए जाते हैं.

प्राणायाम हेतु 'यम' अर्थात् आहार में नियंत्रण, 'नियम' अर्थात् मन की शुद्धता और 'आसन' अर्थात् सुविधाजनक शारीरिक अवस्था का परिपालन अत्यधिक लाभप्रद होता है.

ध्यान - 'ध्यान' का तात्पर्य मन की किसी एक बात पर स्थिरता है. ध्यान का मूल अर्थ है जागृत होते हुए भी क्रियाओं तथा विचारों से मुक्ति. मानसिक शांति, एकाग्रता, दृढ़ मनोबल, परम शक्ति से जुड़ाव, मन को काबू कर निर्विचार करना आदि उद्देश्यों के साथ ध्यान किया जाता है. ध्यान की अवस्था में सभी को स्वतः अलग-अलग अनुभूतियाँ होती हैं अतः इसे परिभाषित करना कठिन है. यह योग की उच्चतम उपलब्धियों में से एक है जो निरंतर अभ्यास से प्राप्त होती है.

<u>हमारे बच्चे क्यों नहीं सीख पाते?</u>

लेखक - गोपाल कौशल

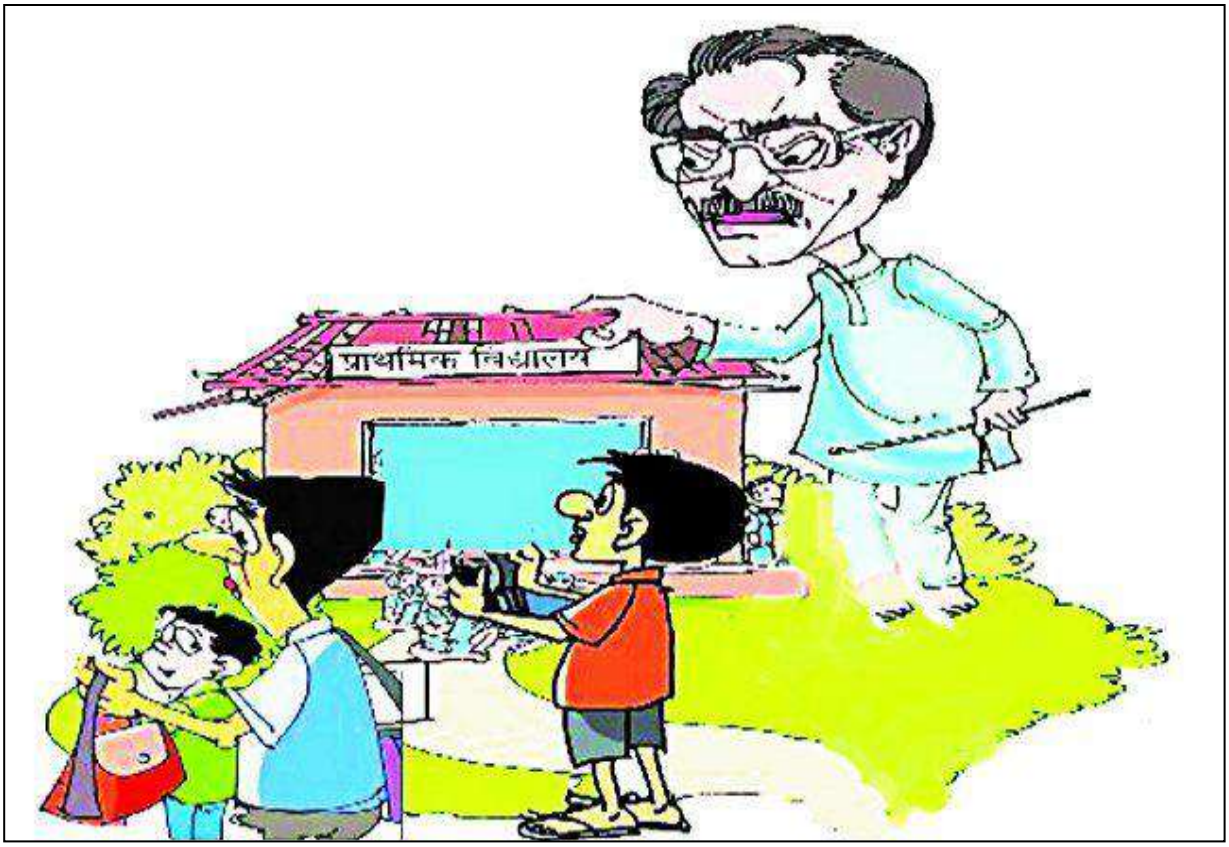

मन मे बडी बैचेनी थी कि बच्चे तेजी से सीखते क्यो नहीं जबकि हम जी तोड मेहनत कर रहे हैं. हमारी मेहनत मे कमी नहीं फिर भी परिणाम अपेक्षित नहीं. गहन विचार के बाद कुछ बातें समझ मे आयीं.

हम बच्चों को अपने हिसाब से सिखाना चाहते हैं, बच्चों के सीखने के हिसाब से नहीं चलना चाहते, जबकि NCF के अनुसार “our teaching principles should be based on learning principles.” हम उल्टा यह मान बैठे हैं कि Learning principles should be based on our teaching principles. बस यही वह गल्ती है

जिसको हम लगातार करते आ रहे हैं और बदलने को तैयार भी नहीं हैं. किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये इन बातों पर विचार करना होगा -

1. हम किस तरह से पढा रहे हैं?
2. हमारी मान्यताएं क्या हैं?
1. इसके क्या परिणाम आ रहे है?
2. हमे करना क्या चाहिए?
3. क्या हमे अपनी कार्य पध्दति को बदलने की जरूरत है?

हम कर क्या रहे हैं? अगर ध्यान से देखें तो हम निम्न लिखित कार्य कर रहे हैं -

1. पढाने के नाम पर हम उन पाठ्यपुस्तकों को पूरी करा रहे हैं जो किसी कक्षा विशेष के लिये निर्धारित होती हैं.
2. हम जी जान से पढाने में जुटे हुए हैं.
3. कक्षा में घुसते ही बोर्ड पर लिखना और बोलना शुरू कर देते हैं और लगभग 90% से 95% समय तक हमारा यही क्रम रहता है.
4. हम खुश होते हैं कि हमने उच्च स्तर का ज्ञान देते हुए पढा दिया है.

इस पूरे समय मे बच्चों ने क्या किया? केवल मूक दर्शक बनकर बोर्ड से उन चीजों को उतार लिया. जरा सोचिये, क्या यह पढाना हुआ? क्या हमने बच्चों के अनुभवों को महत्व दिया? नहीं न. फिर बच्चा भी आपके अध्यापन को महत्व क्यों दे?

आप बार बार उन्ही चीजों पर बच्चों को घुमा रहे हो जो उसको आती हैं. उदाहरण के लिए हम मरोद्भिद पादप पढा रहे हैं तो हम मरोद्भिद पादपों की परिभाषा व उनकी विशेषताएं एवं उनके उपयोग बोर्ड पर लिखा देते हैं, जिन्हें बच्चे पहले से और आपसे ज्यादा अच्छी तरह से जानते हैं. अगर आपने बच्चों की जानकारी को ही बाहर निकाल लिया होता तो न तो आपको इतनी मेहनत से लिखने की जरूरत थी और ना बालकों को रटकर याद करने की.

NCF कहता है बच्चों के अनुभवों को बाहर निकाल कर उन्हें व्यवस्थित कर दीजिए, बस. उनको ज्यादा से ज्यादा उदाहरण दीजिए. उन उदाहरणो से अपनी तरह से अपनी भाषा मे व अपनी समझ से नियम बनाकर अपनी परिभाषा तैयार करने दीजिए. उन्हें ऐसा माहौल दें कि वे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं कर सकें. इसके लिए उन्हें समय दीजिए. अपना समय कम कीजिए. 20% से ज्यादा समय आपको नहीं लेना है. 80% समय बच्चों के व्दारा प्रयोग किया जाना चाहिए.

हम बच्चों को जाते ही कहते हैं चलो बच्चों किताब निकालो आज फलां पाठ पढेंगे. यह सुनते बच्चों के मन मे बोझ सा पडने लगता है. जबकि होना यह चाहिए कि हम बच्चों को यह अहसास कराये कि हम वार्तालाप कर रहे हैं. नयी जानकारी को बच्चों के अनुभवों से जोड दें.

भाषा पढाते समय हम व्याकरण को अलग से पढाते है. अत: उसका उपयोग व्यवहार मे करने मे बच्चे कठिनाई महसूस करते हैं. होना यह चाहिए कि हम बच्चों को व्याकरण भी communication के दौरान उदाहरण देकर प्रयोग से सिखायें. हम जो अलग से व्याकरण के नियम सिखाने मे समय लगाते हैं उसका उपयोग बालक को स्वयं करने दीजिए. बालको को 3-4 उदाहरण देकर वहीं अभ्यास करा दीजिए. बच्चे खुद ही नियम बना लेंगे.

हम यह मान बैठे हैं कि बच्चे कुछ नहीं जानते. वे कुछ भी नहीं कर पायेंगे. अरे साहब इस मिथक से बाहर तो निकलिए. बच्चों पर विश्वास तो कीजिए.

आजकल एक trend चल पडा है गतिविधि कराने का. गतिविधि के नाम पर व्याकरण का topic लिया और कुछ क्रियायें करा दी और उन्हें रटाकर video बनाकर facebook, whatsapp, U tube पर डाल देते हैं. ध्यान से देखें तो उनमे चिन्तन व अनुप्रयोगों का नितांत अभाव होता है. नतीजा वो ज्ञान उस गतिविधि के साथ ही समाप्त हो जाता है. आपकी गतिविधि मे चिन्तन व अनुप्रयोग होने चाहिए तभी आपकी गतिविधि निष्कर्श तक पहुंच पायेगी.

मित्रो यदि आपको अपने आपको पुनःस्थापित करना है और समाज मे प्रतिष्ठा पानी है तो CLT को अपनाना होगा GLT को छोडना होगा. Lecture की जगह activity को महत्व देना होगा. बच्चों को अपना ज्ञान निर्माण करना सिखाना होगा. बच्चों को अपना दोस्त बनाना होगा, ताकि वे भी हमे अपना mentor समझने लगें. Time ratio - 20% teacher व 80% छात्रों का करना होगा. अपनी भाषा एवं पध्दति को सरल बनाना होगा. हमारा उद्देश्य कोर्स पूरा कराना ना होकर बच्चों के मन मे समझ आने पर जोर देना होगा. व्याकरण के topics अलग से नहीं पढाकर वार्तालाप के वीच मे ज्यादा से ज्यादा उदाहरण देकर व्यावहारिक रुप मे समझाइए. टुकडों मे पढाई हुई व्याकरण ठीक वैसी ही है जैसे, हाथ, पांव, मुँह, नाक, कान बाल, रंग रूप के वर्णन के आधार पर किसी व्यक्ति का अनुमान लगाना. अगर बर्णन करने के बजाय उस सम्पूर्ण व्यक्ति को ही सामने खडा करके वर्णन खुद बच्चों को ही करने दें तो भ्रम की स्थिति पैदा ही नही होगी.

छत्तीसगढ़ी लोककथा - नान्हे-नान्हे मनखे

लेखक - बलदाऊ राम साहू

तइहा के बात आय. एक समय मा पिरथी ले अगास हर थोरिक उप्पर रहिस. अतकी उप्पर की कोनों ओला हाथ ले छू सके. ओ समय मा मनखे मन नान्हे-नान्हे राहय. कोनो-कोनो मन थोरकिन ऊँच राहय, ओ मन निहर-निहर के रेंगय. ओ समय लोगन के जरूरत बहुत कम राहय. जतका रहय ओतके मा गुजारा करय. फेर जोर के राखे के का काम. ओ समय के मनखे मन अबबड़ सिधवा रहिन. धरती हर अन्न उगले. रूख-राई ह फल-फूल ले लदे रहय. इन्दर देवता मनखे मन के जरूरत के हिसाब से पानी बरसावै, सुरूज देव सुग्घर अंजोर बगरा के मनखे मन के ऊपर उपकार करय. न तो जादा पानी गिरय न कम. चारों कोति सुख के राज रहे.

नान्हे-नान्हे मनखे, नान्हे-नान्हे रुख-राई, हरियर-हरियर खेत, अन्न के भरे कोठार सबो झन हिल-मिल के रहय. एकरे सेती जम्मो धरती मा खुशहाली छाय रहय.

उही समय एक डोकरी राहय, ओ हर चिड़चिड़ही सुभाव के रहय. नान-नान बात मा चिड़चिड़ा जावै. ओ ह बड़ घमंडीन घलो रहय. अगास ह गजब नीचे रहय. तेकर सेती मनखे मन ल निहर के काम करे बर पड़े, अइसने निहर के काम करई डोकरी ल बने नइ लागय. जब डोकरी ह अंगना ल बहारे त, ओकर मुड़ी हा घेरी-बेरी अगास मा टुकठाक लागय तेकर सेती ओला बड़ परशानी होवय.

एक दिन के बात आय, डोकरी अपन अँगना ल बाहरत रहिस. बाहरत-बाहरत वो हर सोचिस कतका अच्छा होतिस, बैरी अगास हर उप्पर चल देतिस. घेरी-बेरी मुड़ी के टकराय ले ओ हर बड गुसिया जाए. डोकरी हर गुसिया के अपने हाथ मा बहरी ल धरीस अऊ मुठिया मा अगास ल जोर से मारिस अगास हर गजब जोर से गरज के उप्पर उठ गे. सुरुज, चंदा, चंदैनी सब डर्रागे. अगास हर उप्पर उठिस, त देवता मन गुसियागे सुरुज देवता हर अपन ताप ले पिरथी ल झुलसे लगिस. इंद्र देव घलो नराज होगे. ओ हर कभू खूब पानी बरसाय, त कभू बरसाबे नइ करे. पिरथी मा चारों कोती हाहाकार मचगे. डोकरी हर सोचय लगीस कि कतेक अच्छा रहिस कि जब अगास हर तीर मा रहिस, पानी के जरूरत पड़य, त बादर ल थेरिक हटा देव त पानी मिल जाय, बादर ल थेरिक सरका देहे ले घाम मिल जाए. ए सब सोच के डोकरी हर गजब दुखी होगे. डोकरी ल अपन करनी के बड़ पछतावा होय लगिस. फेर अब का हो सकत रहिस? आजो मनखे ह ओही गलती ल घेरी-बेरी करथे. जे चीज ल ओकर तीर हावै वोही ल ओ हर अपन ले दूरिहा करत जात हे. भुँइया भीतर के पानी ल उत्ता धुर्रा निकालत जात हे. जरूरत ले जादा धरती भीतर के खनिज पदारथ ल खन के निकालत जात हे. जंगल मन ल काटत जात हे. अऊ एक तरह ले मनखे ह अपन विनाश ल नेवत हे.

सूरज

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

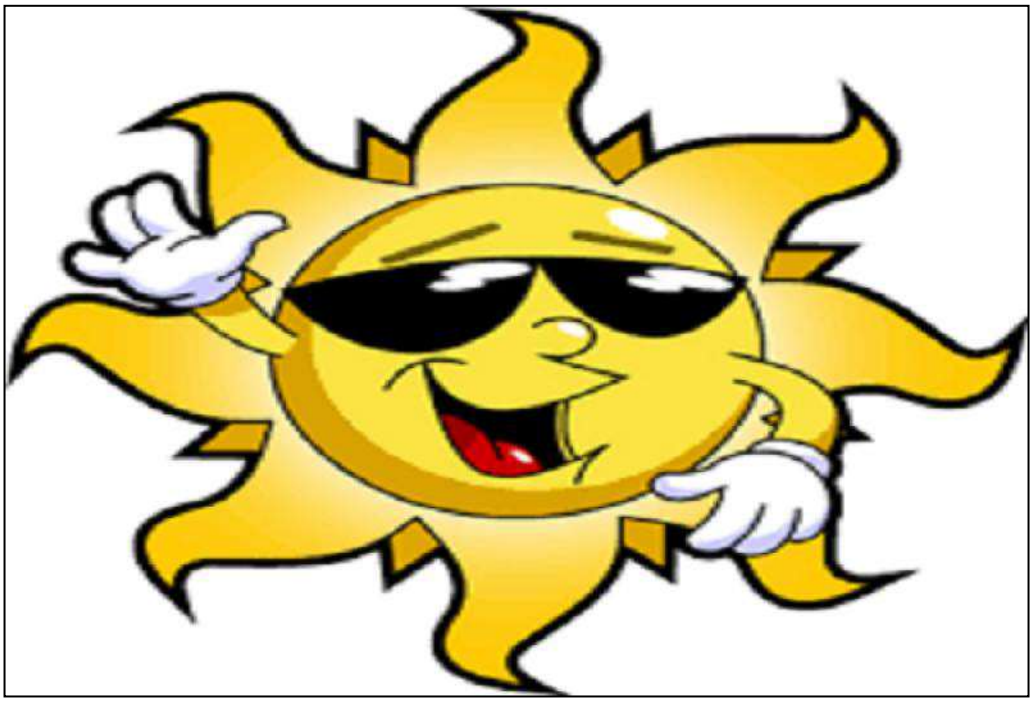

बड़े बिहनिया आथे सूरज
अउ अंजोर बगराथे सूरज
उठा नींद म बुड़े धरती ले
नवा सिरजन करवाथे सूरज
सुघ्घर लाली बिंदिया बनके
आसमान म भाथे सूरज
तरिया के लहरा म परके
मोती अस झिलमिलाथे सूरज
बन मितान कस छईहाँ अंजोर म
संग-संग मोर जाथे सूरज
दुख के बादर ले सुख आही
जग ल आश देखाथे सूरज...

सूरज दादा

लेखक - बलदाऊ राम साहू

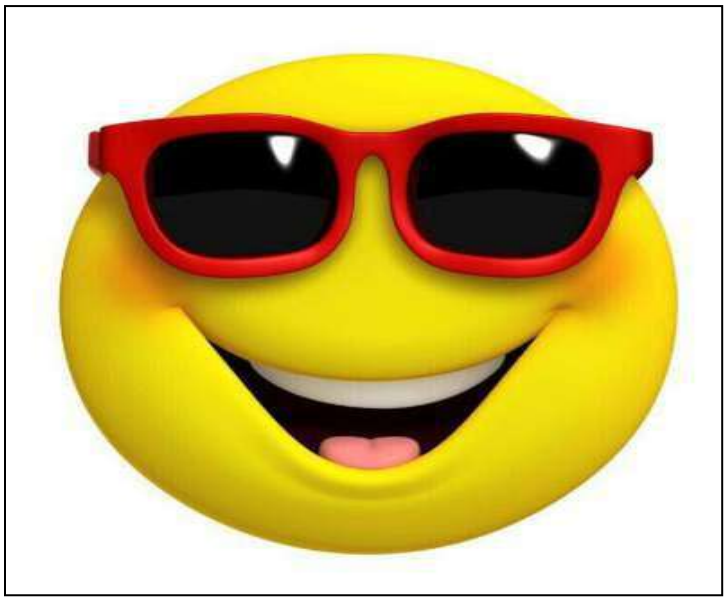

सूरज दादा भरी दुपहरी

कर लो तनिक आराम,

चलते-चलते तुम थक जाओगे

कैसे करोगे काम।

कहीं तुम्हें पर्वत मिले तो

तनिक वहाँ सुसताना,

पेड़ों के ही पास बैठकर

रघुपति राघव गाना।

जंगल के वे पंछी सारे

पास तुम्हारे आएँगे

मोर, पपीहा और कोयलिया

सुन्दर गीत सुनाएँगे ।

मेरी चड्डी-बनियान

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

वो मेरी चड्डी-बनियान, कहाँ है मम्मी ?

आपने टेबल पर रखी थी ।
मैंने भी यहीं पर देखी थी ।
वो मेरा पहला परिधान, कहाँ है मम्मी ?
वो मेरी चड्डी-बनियान, कहाँ है मम्मी ?

वो साथी मेरे बहुत प्यारे ।
रंगीन सुंदर और न्यारे ।
वो मासूम-बेजान, कहाँ है मम्मी ?
वो मेरी चड्डी-बनियान, कहाँ है मम्मी ?

काम नहीं बनेगा व्यर्थ कूढ़ने में ।
कुछ मदद करो अब ढूँढ़ने में ।
वो मेरे पहनावे की शान, कहाँ है मम्मी ?
वो मेरी चड्डी-बनियान, कहाँ है मम्मी ?

<u>योग</u>

लेखक - कमलेश वर्मा

तन-मन ला रखना हे चंगा, करव सबो झन योग।

बीमारी नइ लेवय पंगा, काया रिही निरोग।।

भारत के हे ज्ञान पुराना, ऋषि मुनि-आविष्कार।

पूरा दुनिया मा छा के अब, योग करत उपचार।।

सबो अंग बर आसन हे जी, अड़बड़ होय प्रकार।

शरण योग के जावव संगी, झन राहव लाचार।।

मोबाईल किस काम के

लेखक - विकास कुमार हरिहारनों

बच्चों हेतु

"जब तक समझ ना बने,
रख्खो सदा इससे दूरी,
वरना पड़ेगा तुम्हें ही भारी,
इसे न बना मजबूरी ।"

माता-पिता हेतु

"अपनों से जुड़ना,
सब काम करना,
पर देकर इसे, बच्चों के हाथों,
उनसे तुम ना बिछुड़ना।"

शिक्षकों हेतु

"मैं भी इससे सीखूँ,
तुम भी इससे सीखो,
ज्ञान और विज्ञान,
भिन्न, दशमलव मान।"

सब हेतु

"नहीं है ये फ़ैशन,
न लो इसकी टेंशन,
सफलता मिलेगी तुम्हें,
अपने ही अपने काम से।"

फूट

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

वाह रे हमर बखरी के फूट, फरे हाबे चारों खूंट
बजार में जात्ते साठ, आदमी मन लेथे सबला लूट
मन भर खाले तेंहा फूट, खा के झन बोलबे झूठ
फोकट में खाना हे त आजा, उतार के अपन दूनों बूट
वाह रे हमर बखरी के फूट, फरे हाबे चारों खूंट
लट लट ले फरे हे एसो फूट, राखत रहिथे समारु ह
पी के दू घूंट

चोरी करथे तेला तो, देथे गारी छूट
मिरचा अऊ लिमऊ ल बांधे हँव, मारे झन कोनो मूठ
जतका खाना हे खाले तेंहा फूट, अऊ नई खाना हे
त चल ते इंहा ले फूट
वाह रे हमर बखरी के फूट, फरे हाबे चारों खूंट

पश्चाताप

रचनाकार - श्रवण कुमार साहू "प्रखर"

एक लकड़हारा लकड़ी काटने,

नदी किनारे खड़ा था।

उसकी कुल्हाड़ी का वार,

हर बार लकड़ी पर भारी पड़ा था।

देखते ही देखते ही उसने,

सारे पेड़ काट डाले।

माथे पे पड़ा पसीना,

हाथों पर पड़ गए छाले।।

भूख और प्यास से,

वो बैचेन हो रहा था।।

गर्मी के मारे अपना,

आपा खो रहा था।।

इस बैचेनी का ,

क्या हल मैं निकालूँ।

अगर दिखे कहीं पेड़,

तो जाकर मैं सुस्ता लूँ।।

पर दिखा ना कोई पेड़,

ना दिखा कोई ठिकाना।।

पेड़ काटकर काहे तू,

खोजे फिर आशियाना।।

पेड़ काटकर खुद वो,

हुआ फिर शर्मिंदा।।

प्रकृति के बिना भला कोई

यहाँ रह सकता है क्या जिंदा ?

बचपन

लेखिका एवं चित्र - स्नेहलता "स्नेह"

भोला बचपन, न्यारा बचपन

लगता सबको प्यारा बचपन

हंसता औ मुस्काता बचपन

स्नेह सुधा बरसाता बचपन

सबको है अपनाता बचपन

प्रियषा सा मन पाता बचपन

बारिश में हर्षाता बचपन

छप छप धूम मचाता बचपन

रेत में किला बनाता बचपन

धूल का फूल कहाता बचपन

सीख यही दे जाता बचपन

लौट के फिर न आता बचपन

तोत्ते चान

लेखक - योगेश ध्रुव (भीम)

(यह कविता खंड जापान की एक लड़की तोत्ते चान पर आधारित नाटकीय मंचन की दृश्य को कविता के रूप में लिखा गया जो मन में उठने वाले भाव है)

एक लड़की,
निश्च्छल मन,
चंचल मन,
खेलना,
फुदकना चाहती,
आशाएं लिये,
भावनाए सँजोए
मन मे,
आसमान सी ,
पर्वत सी,

नदियों की धार सी,
बगियों की फूल सी,
हा मैं एक लड़की,
पकड़ी माँ की उंगली,
खुशी से आनंदित,
उठी झूम,
जाना था स्कूल,
कल्पना की क्यारियां,
डेस्क की आवजे,
धम-धम,
बंधा सा,
ठगा सा,
झरोखे पर खड़ी,
हा एक लड़की,
करती प्रश्न,
अबाबील से,
क्या करोगे बाते मुझ से,
हा करोगे बाते,
हा एक लड़की ,
तोत्ते चान हु,
बार-बार टीचर की,
डांट फटकार,
न करो खीझता,
मन मे अकुलाहट,
प्रकृति सा चंचल,
उमंगता,स्वतंत्रता,
बचपन मन को,

न करो दूर,
अपनत्व की भाव चाहिए,
ऐसी कल्पना लिये,
हा मिल गया,
मिल गया,
इक छोटी सी आशा,
खोजता मन मेरा,
अपनत्व, निजता की भाव,
छोटी सी आशाएं ,
मन की उमंगता,
इठलाती,बलखाती,
चंचलता की राह बनाती,
जो समझे भाव,
बरबस मेरी मन की भावना,
एक ऐसा इंसान,
प्रकृति की रम्यता,
हर भावो को जोड़ना,
बनता मदारी,
करता करतब,
हा चाहती हूँ,
ऐसी भाव,
हा तोत्ते चान हूं.
मुझे जाना है स्कूल,
जाना है,
जाना है,
स्कूल,
हा मैं तोत्ते चान हूं.

आगे सँगी सावन

लेखिका - शीला गुरुगोस्वामी

हवा चलीस फुरर फरर

गर्जिस बादर गरर गरर

रूख राई डोलिस सरर सरर

लौकतचमकत बादर नाचे

आगे। सँगी सावन ह आगे

तरिया, नरवा, लबलबागे

खेत खार दबदबागे

छांहि मन चुहचुहागे

माड़ी भर चिखला ढलागे

आगे सँगी सावन ह आगे

मेचका टर्र टर्र नरियाये

झेंगरा मन तको सुर्राये

नांचुन बीजा बगराये

झाड़ झरोउखा लहलहआगे

आगे सँगी सावन ह आगे

खेती किसानी

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

बादर गरजे बिजली चमके, गिरय झमाझम पानी ।
सबके मन हा हुलसत हावय, करबो खेती किसानी ।।
खातू कचरा फेंकय सबझन, नाँगर ला सिरजाये ।
काँटा खूँटी साफ करय सब, मेड़ पार बनवाये ।।
चूहत रहिथे परछी अब्बड़, छावय खपरा छानी ।
सबके मन हा हुलसत हावय, करबो खेती किसानी ।।

बड़े बिहनिया बासी धर के, चैतु खेत मा जाथे ।
मिहनत करथे सबो परानी, तब बासी ला खाथे ।।
मिहनत के फल मिलथे संगी, हावय बादर दानी ।
सबके मन हा हुलसत हावय, करबो खेती किसानी ।।

गुरूजी के गोठ

रचनाकार - संतोष कुमार साहू "प्रकृति"

मोर स्कुल के लयिका मन ह, बड सुघ्घर लागे न।

बड सुघ्घर लागे न।

मोर स्कुल के.....।।

१

कन्हो ह रामे, कन्हो ह लक्ष्मण,कन्हो ह किशन कन्हायी हे।

कन्हो ह दुर्गा ,कन्हो ह राधा, कन्हो ह सीता मायी हे।।

कन्हो ह ध्रुव कन्हो ह प्रहलाद हे, बड सुंदर लागे न।।

मोर स्कुल के लयिका मन ह, बड सुघ्घर लागे न ।।

२

इही मा बेला, गुलाबे इही मा , इही मा सूरजमुखी हे।

इही मा जूही ,चंपा इही मा, इही मा सुघ्घर चमेली हे।।

इही मा केंवरा इही मा मोंगरा ,बड सुंदर महके न।।

मोर स्कुल के लयिका मन ह बड सुघ्घर लागे न।।

३

कनहो ह गांधी, कन्हो ह गौतम , कन्हो ह विवेकानन्द हे।

कन्हो ह लक्ष्मी , कन्हो ह टेरेसा , कन्हो ह कस्तुरबा बाई हे।।

कन्हो ह अनसुईया कन्हो ह सावित्री,बड सुघ्घर लागे न।।

मोर स्कुल के लयिका मन ह

बड सुघ्घर लागे न।।

घाम (कुण्डलियाँ छंद)

रचनाकार - महेन्द्र देवांगन "माटी"

गरमी अब्बड़ बाढ़ गे, जरय चटा चट पाँव ।
भटकत हावय आदमी, खोजय सबझन छाँव ।।
खोजय सबझन छाँव, जीव हा तरसत हावय ।
सुखगे नदियाँ धार, कहाँ ले पानी पावय ।।
व्याकुल हावय देह, होय कब मौसम नरमी ।
चुहय पसीना माथ, बाढ़ गे अब्बड़ गरमी ।।1।।

बरसत आगी घाम मा, टोंटा अबड़ सुखाय ।
सुक्खा हावय बोर हा, कइसे प्यास बुझाय ।।
कइसे प्यास बुझाय, सबोझन खोजय पानी ।
काटे हे सब पेड़, याद आवत हे नानी ।।
बूँद बूँद बर आज, आदमी रोजे तरसत ।
का होही भगवान, घाम आगी कस बरसत ।।2।।

चलो योग करें

लेखक - श्रवण कुमार साहू "प्रखर"

तन का मन से।

मन का धन से।।

धन का जीवन से।

जीवन का अर्पण से।।

अर्पण का समर्पण से।

समर्पण का अर्चन से।।

अर्चन का वंदन से।

वंदन का अभिनंदन से।।

चलो योग करे।

जगत का जीव से।

जीव का जीवन से।।

जीवन का प्रकृति से।

प्रकृति का संस्कृति से।।

संस्कृति का संस्कार से।

संस्कार का व्यवहार से।।

व्यवहार का विचार से।

विचार का संसार से।।

चलो योग करें।।

व्यक्ति का शक्ति से।

शक्ति का भक्ति से।।

भक्ति का भाव से।

भाव का भावना से।।

भावना का कामना से।

कामना का शुभकामना से।।

शुभकामना का दृष्टि से।

दृष्टि का सृष्टि से।।

सृष्टि का ब्रम्ह से।

ब्रम्ह का परब्रह्म से।।

चलो योग करें।।

<u>जेठ के सुरुज</u>

लेखक – जी. आर. टंडन

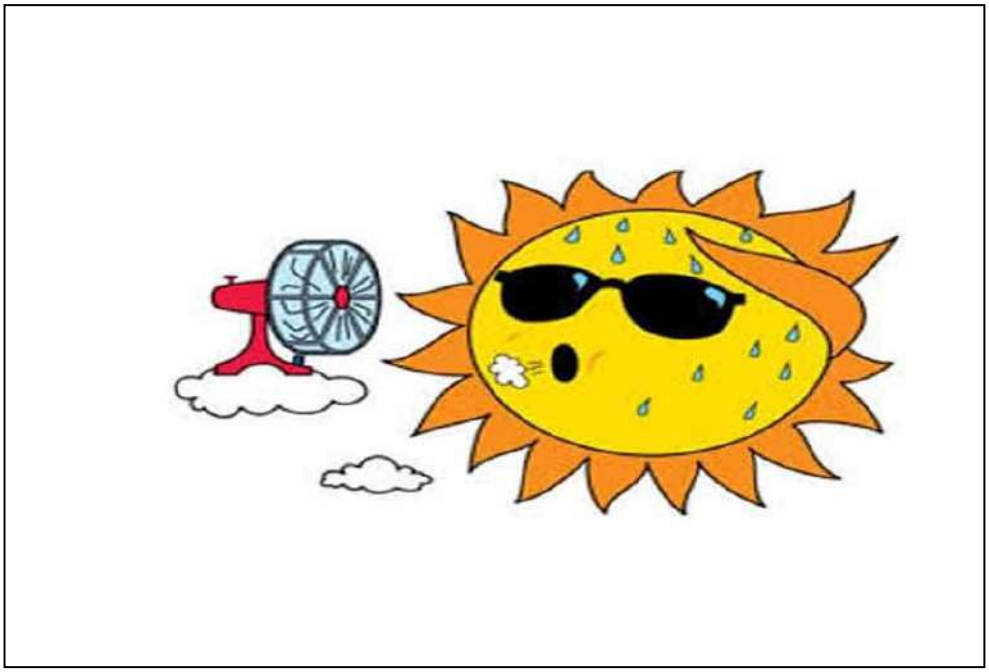

अब मोला लागे बिहान झन होय जी।

जेठ के सुरुज हा कांटा कस चुभती जी।

जेठ के सुरुज बडे बिहरिया चरचराथे घाम हा।

करिया के कोइला होगे, हमरो सुग्घर चाम हा।

नेता हो, भिखारी हो, किसान झन होय जी।। अब मोला।।

सुत उठके किसान हा, लहुटावय माटी ढेला।

जाड़ घाम में कमाथे, चौउमास पानी के रेला।

हवा चले आगी अस, सब्बो जी व रोय जी।। अब मोला।।

गांव के नरवा गरुवा , गुरुवा बारी, सबो मांगे पानी पानी।

दया धरम मनखे म नैइये , खान होगे आनी बानी।

कोनो बरखा ला बरसाय बर, बर पीपर, लीम बोय जी।।

अब मोला लागे बिहान झन होय जी।।

दाखिला लें सरकारी (रोला छंद)

लेखक - कन्हैया साहू "अमित"

चलो चलें हम स्कूल, आज अब से सरकारी।

अपने घर के पास, करें शाला से यारी।

दौड़भाग क्यों दूर, पसीना व्यर्थ बहाना।

सबके रहो समीप, वहीं पर नाम लिखाना।

नया-नया परिवार, नई खुशियों का मेला।

हमजोली का साथ, लगे हैं रेलम-पेला।

कापी पेन किताब, पहाड़ा रख लो बस्ता।

भाँति-भाँति के लोग, लगे शाला गुलदस्ता।

टन-टन घंटी बोल, कान में मधुर सुनाती।

बजते दस जब नित्य, सभी को स्कूल बुलाती।

ईश विनय करजोड़, प्रार्थना मन से गाते।

साफ सफाई योग, स्वच्छ तन स्वस्थ बनाते।

सरस्वती का धाम, बड़ा पावन विद्यालय।

पढ़ना लिखना पाठ, सीख का उत्तम आलय।

खेलकूद सब साथ, मेहनत तप अनुशासन।

नैतिक सद्व्यवहार, सभ्यता संग उपासन।

भ्रम झूठ से दूर, प्रमाणित होती शिक्षा।

साझा सेवाभाव, समर्पित होती कक्षा।

प्रीत भरे प्रतिपाल, दीप सम जलते शिक्षक।

शिक्षा सह संस्कार, सहज बनते संरक्षक।

विनय विमल व्यवहार, स्कूल सबका सरकारी।

भेदभाव का भाग, गुणा गुण शिष्टाचारी।

हृदय बालपन जोड़, कहाँ ऋण फिर गुणवत्ता।

देश राज्य समुदाय, सदा सहयोगी सत्ता।

हाथ धुलाई लाभ, रगड़ धोना सिखलाते।

मीनू के अनुसार, गर्म भोजन सब खातें।

दो जोड़ी गणवेश, किताबें मिलती पूरी।

सबको शिक्षादान, पढ़ाई जीवन धूरी।

छात्रवृत्ति प्रतिवर्ग, पढ़े होकर उत्साही।

मुफ्त सायकल प्राप्त, सुलभ सब आवाजाही।

शिक्षक सभी सुयोग्य, बेहतर पाठ पढ़ाते।

उच्च प्रशिक्षण प्राप्त, देश का भाग्य बनाते।

शौचालय उपयोग, पृथक सब बाला बालक।

विविध कला पर जोर, देख खुश होते पालक।

भाँति भाँति के खेल, मान सबका सदा बढ़ाते।

नवाचार व्यवहार, यहाँ संगणक पढ़ाते।

फिर क्यों इतना सोच, दाखिला लें सरकारी।

नहीं यहाँ पर शुल्क, प्रथम यह जनहितकारी।

साधन सुविधा सर्व, सदागम सत समझातें।

नैतिकता भरपूर, शिष्य को योग्य बनाते।

छोड़ निजी का मोह, स्कूल सरकारी आओ।

निज भाषा में ज्ञान, सहज ही पढ़कर पाओ।

शिक्षक सक्षम सिद्ध, 'अमित' होते उपकारी।

शंशय सारे त्याग, दाखिला लें सरकारी।

पेड़

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

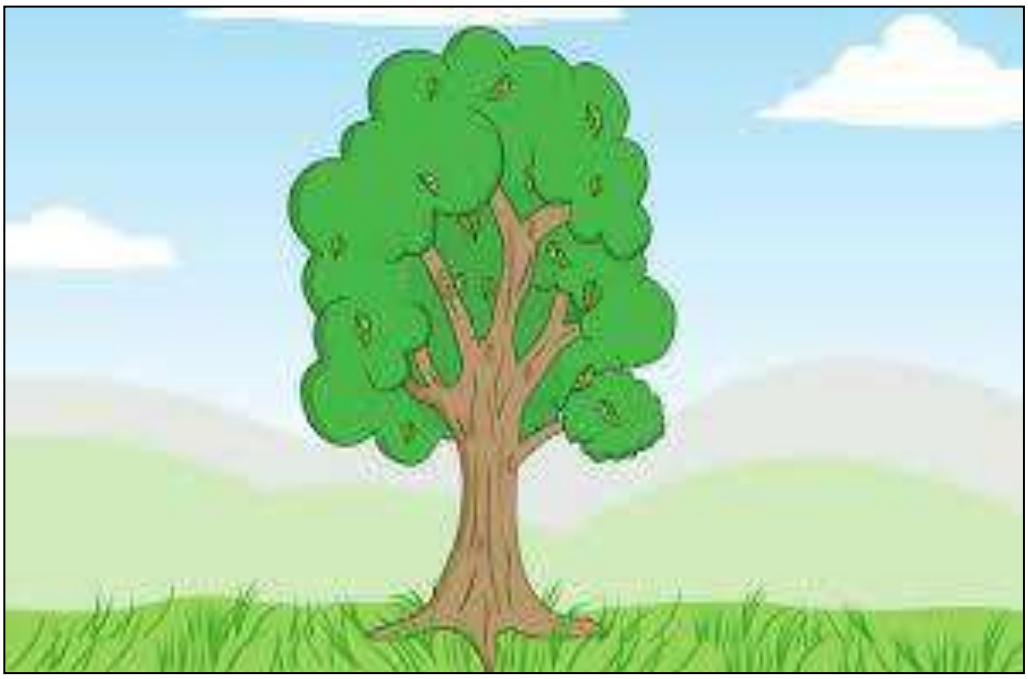

सर-सर सर-सर गाथे पेड़
हवा संग लहराथे पेड़
जरे भुईया गर्मी के मारे
छांव अपन बगराथे पेड़
टूहु देखावे लबरा बादर
अपना तीर खिंच के लाथे पेड़
भला मारथन पथरा हमन
मीठ फल टपकाथे पेड
बिख हवा के पी पी
ऑक्सीजन बगराथे पेड़
ननपन के झूलना बन झूले
बुढ़वा के लउठी बन जाथे पेड़
जिनगी भर संग हमर दे
सुघर मया बगराथे पेड़

<u>वर्षा ऋतु</u>

लेखिका - पद्यमनी साहू

वर्षा ऋतु आई है

नव जीवन साथ लाई है।

ग्रीष्म से तपती धरा पर

अमृत धार बरसाई है।।

सुखते जल मण्डल में

मौजो की बहार लाई है।

तितली नाचे भौंरे गाये

मछली मेंढक मौज उड़ाये।

इतनी खुशियां लाई है

वर्षा ऋतु आई है।।

फूलों की खुशबू से

महका है चमन सारा।

नजरें जहाँ भी जाती है

भा रहा हर नजारा।।

कलियों पर मंडराते भंवरे

प्रेम का गीत सुनते हैं।

उसने भी तृप्ति पाई है

वर्षा ऋतु आई है।

हरियाली की चादर ओढा

धरा का कर रहा श्रृंगार।

रूप और सौंदर्य का उसको

दे रहा अनोखा उपहार।

लगती धरती कितनी प्यारी

अनुपम अदभुत और न्यारी।।

दृश्य मनोहर छाई है

वर्षा ऋतु आई है।।

परकीति रानी

लेखक - कमलेश कुमार वर्मा

परियावरन म बसे हे संगी, सबो के सुग्घर जिनगानी।

अवइया दिन बर बचाय रखव तुम रुख-राई अउ पानी। ।

फेक्टरी-गाड़ी के धुँआ ल देख, होवत हे बड़ पछतानी।

हवा म घुलथे जहर कस, अब सांस ह नइये आसानी।।

तरिया-नदिया घलो मइलागे, जउन हरे हमर कल्यानी।

कचरा के अड़बड़ ढेर लगा, करत हाबन नादानी।।

परदूसन ले बाढ़गे, तनाव-बीमारी-परसानी।

सोरगुल म कान ह भरगे, दुखदायी हे ये सब कहानी।।

साफ हवा-निरमल जल बर, उपाय करव आनी-बानी।

पेड़ लगावव-पेड़ बचावव, झन काटव येला मनमानी।।

जीव-जंतु, चिरई-चिरगुन के, कम सुनावत हे मीठ बानी।

जुरमिल सब संवारव संगी, हमर ये परकीति रानी।।

पेड़ पर आधारित दोहे

लेखक - श्लेष चन्द्राकर

पेड़ हमारे मित्र हैं, इनका करें बचाव।
पानी का होगा नहीं, फिर तो कभी अभाव।।

धरती माता से अगर, करता सच्ची प्रीत।
पेड़ लगा पानी बचा, नेक कार्य यह मीत।।

तरुवर तो देते हमें, काष्ठ और फल फूल।
इन्हें काटना साथियो, बहुत बड़ी है भूल।।

प्राणवायु का स्रोत है, पेड़ यहाँ हर एक।
पेड़ काटना छोड़ दो, इनके लाभ अनेक।।

पेड़ बचाने के लिए, दिया नहीं यदि ध्यान।
सारी धरती एक दिन, होगी रेगिस्तान।।

पेड़ काटकर जो यहाँ, करते काज विचित्र।
महाभूल पर एक दिन, पछताएंगे मित्र।।

करना जंगल काटकर, ग्राम्य नगर विस्तार।
जीव-जन्तु हित में नहीं, बदलों तुरत विचार।।

पेडों की रक्षा करें, पौधे रोपे मीत।
हराभरा पर्यावरण, करना कार्य पुनीत।।

मृदा अपरदन रोकने, आओ करें विचार।
पेड़ लगाए हम चलो, नदी झील के पार।।

बरखा आगे...

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

बरखा आगे बरखा आगे
घुमड़- घुमड़ के गरजे बादर
चम-चम चम-चम बिजरी छागे
उजड़े रहिस धरती के कोरा
बूँद-बूँद ल पाके हरियागे
आसमान म चमकत सूरज
करिया बादर तीर लुकागे
टर्र-टर्र मेचका करथे
रतिहा म झिंगरा नरियाथे
तपत धरती के अन्तस म
बून्द बरस के मन ल भाथे...

वृक्षारोपण

लेखक - मो.शम्स तबरेज आलम

वृक्ष हमें लगाना है।
प्रकृति को बचाना है।।

वृक्ष ही मिट्टी का कटाव घटाता।
वृक्ष ही बाढ़ से बचाता।।

वृक्ष से ही बादल का आना।
बादल का फिर जल बरसाना।।

वृक्ष से ही है हरयाली।
वृक्ष ही देता वायु प्राण।।

वृक्ष के छाया बिन।
तड़पती हमारी जान।।

वृक्ष जो जमीं पर न रहा।
हम भी रह न पाएंगे।।

वृक्ष जो मिट गया।
हम भी मिट जायेंगे।।

ग्लोबल वार्मिंग जैसे समस्या हमने ही लायी है।
जितने हमने वृक्ष न लगाएं,उतनी हमने गवाई है।।

चलो हम सब हाथ बढ़ाएं।
मिलकर हम सब वृक्ष लगाएं।।

<u>रुख राई हे गहना</u>

लेखक - जी. आर. टंडन

रुख राई हे एकर गहना, गंगा पांव पठार हव।

मैं छत्तीसगढ़ दाई के, छत्तीसगढ़ के मांथ नवावत हव।।

सिमगा, सिगारगढ़, सिगारपुर, सिरपुर, दुरूग, पाटन, लवण, अमोरा, हे।

सारधा, अकलमार, सुअरमार, सिरपुर, राईपुर, राजिम धान कटोरा हे।

गढ़ फिगेश्वर, मोहदी, खल्लारी।

बनगे रायपुर नवा राजधानी।

जगा, जगा देवी देवता के दस ना,

श्रद्धा फूल चरावत, हवा।।

ओखर, सेमरिया, पंडरभट्ठा, मोहित, विजय पुर, उपरौरा।।

कोटगढ़, कुरकट्टी, लाभांश, मारो,मदन, रतनपुर खरौंद।

केन्दा, सोंधी, टेंडर, को सवाई, होत बिहरिया चहरे चिराई।

इहां झरत हे, झर झर झरना, चिखला ला चंदन लगावत हवा।।

फर्ज निभाना

लेखक - बलदाऊ राम साहू

बच्चो, अपना फर्ज निभाना।

देश हित में सूली चढ़ जाना।

सरहद पर जो लड़ रहे हैं,

उनको मिलकर गले लगाना।

बैरी कोई ललकारे तब,

तुम भी उनको आँख दिखाना।

दुश्मन से रहना सावधान,

गुप्त रहस्य तुम नहीं बताना।

मुफ्त की दौलत मिले कभी तो,

अपना हाथ तुम नहीं बढ़ना।

बूँद - बूँद से घट भरता है,

पाई - पाई से भरे खजाना।

श्रम का मान 'बरस' तुम रखना

कहता है जी यही जमाना।

टर्र-टों भैया

लेखक - बलदाऊ राम साहू

टर्र-टों भैया, टर्र-टों भैया

बरखा रानी आई है,

काले-काले बादल के संग,

नन्ही बूँदें लाई है।

टर्र-टों भैया, टर्र-टों भैया

आओं मजा उड़ाएँ हम

नन्ही-नन्ही मछली के संग

नाचें, कूदें, गाएँ हम।

टर्र-टों भैया, टर्र-टों भैया

वर्षा को चलो बुलाएँ

हँसते-गाते, शुभ संदेश

कृषकों को भी दे आएँ ।

पहेलियाँ

रचनाकार - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

1

महापुरुषों की धरोहर
है देश की शान
तीन रंगों में लहराता
राष्ट्र की पहचान

2

तीन अक्षरों का शब्द
आदि कटे से गरदन प्यारी
मध्य कटे से संक्षेप बने
अंत कटे से बने तरकारी

3

श्वेत तरल द्रव्य,
सादगी की पहचान
स्वाद होता मीठा
करें सब रसपान

4

दूर की वस्तु का दर्शन
विज्ञान का एक चमत्कार
बता रानी ! क्या है
जे एल बेयर्ड का अविष्कार

5

मैं तीन अंकों की संख्या

सोचो तो मैं कौन हूँ

मैं ठग-बदमाशों की संज्ञा

बूझो तो मैं कौन हूँ

उत्तर : 1. तिरंगा झण्डा, 2. सागर, 3. दूध, 4. दूरदर्शन (टेलीविजन), 5. 420

संस्मरण सृजन के झरोखे से स्कूल के गलियारे तक

लेखिका - आशा उज्जैनी

प्रदेश के स्कूली शिक्षा प्रयोगशाला से कम नहीं. बीते 10 सालों में शिक्षा गुणवत्ता के लिए आधा दर्जन से अधिक योजनाएं लागु की गई. इन योजनाओं को जब तक शिक्षक समझ पातेऔर छात्रों को सिखाते तब तक नियम ही बदल जाते है. मेरी नियुक्ति सरकारी स्कूल में हुई है. मेरा अध्यापन विषय गणित है, लेकिन स्कूल व्यवस्था के तहत मुझे हिंदी एवं विज्ञान विषय अध्यापन का अवसर मिला. ऐसे में मैंने क्रियात्मक दृष्टिकोण की राह अपनाई.

हिंदी अध्यापन को रोचक और प्रभावशाली बनाने एवं पाठ को जल्दी और ज्यादा समय तक याद रखने के लिए छात्रों को पाठ से सम्बंधित चित्र बनवाना, मुख्य बिंदुओं को क्रमबध्द कर लिखने को कहना, फिर पाठ के सारांश को चित्र व लेख के द्वारा छात्रों व्दारा एक एक करके अभिव्यक्ति और वर्णन करना.

हम जानते है की दृश्य और श्रव्य में, दृश्य या देख कर पढंने से जयादा समय तक याद रहता है, और मष्तिष्क में याददाश्त में रहता है. जल्दी नहीं भूलते हैं. मैंने विज्ञान शिक्षण को प्रभाव शाली बनाने पुस्तक में दिए प्रयोग और स्वयं की समझ से एक नए रूप में छात्रों को सीखने का प्रयास किया. जैसे चुम्बक, पौधे के भाग, मशीन, अपशिष्ट प्रबंधन, गति इत्यादि को समझाने के लिए लैपटॉप पर यू ट्यूब की सहायता से विषय एवं टॉपिक से सम्बंधित वीडियो दिखाना इससे उनकी समझ बनती है, समझ विकसित होती है. इसके बाद पाठ का वर्णन करती हूँ. फिर छात्र मेरे मार्गदर्शन में चार्ट पेपर पर चित्र बनाकर, स्वयं प्रयोग करके सीखते हैं.

प्रत्येक कक्षा में गणित कार्नर का निर्माण, चार्ट पेपर एवं सहायक सामग्री व्दारा गणित विषय से सम्बंधित सूत्रों ,प्रमेय ,परिभाषा ,पहाड़ा को प्रदर्शित किया गया है. मैथ्स लैब, गणित मेला का आयोजन करती हूं.

कामीशिबाई थिएटर व्दारा विषय अध्यापन करना, मुस्कान पुस्तकालय का निर्माण, जिसमे शिक्षण समिति के व्दारा पुस्तकों का संकलन एवं उनका उपयोग किया जाता है.

माता उन्मुखीकरण कार्यक्रम के लिये प्रत्येक तिमाही तथा छै माही परीक्षा फल माताओं की उपस्थिति में प्रथम, व्दितीय, तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों को सम्मानित करना, सबसे अधिक उपस्थिति वाले छात्रों एवं उनकी माताओ को श्रीफल देकर सम्मान देना एवं प्रोत्साहित करना आदि किया जाता है.

बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिये स्कूल में शिक्षकों की उपस्थिति में छात्रों को पोस्को कानून की जानकारी एवं पोस्को बॉक्स बनाकर स्कूल में रखा गया है. छात्राओं को हेल्थ एवं हाईजीन अवेयरनेस प्रोग्राम के जरिये अपने शरीर की सफाई,भोजन खान-पान , रहन-सहन के विषय में विस्तार पूर्वक बताया गया.

स्वच्छता जागरूकता के लिए रैली, गांव मे हस्ताक्षर अभियान, छात्रों, शिक्षण समिति, शिक्षकों व्दारा स्कूल एवं गांव की सफाई करना आदि कार्यक्रम किये गए. छात्रों के व्दारा नुक्कड़ नाटक के जरिये, चित्रकला, निबंध लिखकर, पोस्टर बना कर स्वछता सन्देश दिया गया.

प्रतिवर्ष वार्षिक परीक्षा के पश्चात समर कैंप में कलात्मक एवं क्रियात्मक विकास के लिए छात्रों को आर्ट एंड क्राफ्ट, पुरानी एवं बेकार वस्तुओं का उपयोग कर पेन स्टैंड, गुलदस्ता निर्माण, रंगीन कागज से आकृति बनाना, अनेक प्रकार की पेंटिंग जैसे थंब पेटिंग, हैंड पेंटिंग, स्टोन पेंटिंग, पेपर फोल्डिंग से आकृति बनाना, योग व्यायाम, नैतिक शिक्षा आदि का समावेश किया गया. इसके अतिरिक्त छात्र छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए बालसभा का आयोजन जिसमे कहानी, चुटकुले, गाना,पहेलियाँ पूछना आदि भी किया जाता है.

किसी को देने का सुख, मदद करना, सहायता करना ये अच्छी सोच विकसित करने के लिए छात्रों को पुस्तकों का दान करने के लिए प्रेरित करना एवं दान उत्सव मानना आदि भी किया जाता है. स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मष्तिष्क निवास करता है. छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए खेलकूद का आयोजन किया जाता है.

महापुरुषों की जयंती, प्रमुख राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दिवसपर चित्रकला, मेहंदी, निबंध, गाना, नृत्य, रंगोली बनाना, त्यौहार, विदाई समारोह, कक्षा की सजावट करना, यातायात के नियमों को बताना, स्कूल परिसर में वृक्षारोपण कर हरा-भरा बनान, प्रार्थना सभा में आज का विचार, आज की खबर, सामान्य ज्ञान, अनुशाशन एवं नैतिक मूल्यों के संबंध में बताया जाता है.

आओ हंस लें

होटल में कस्टमर: देखो चाय में मक्खी पड़ी हुई है।

वेटर (मक्खी को ध्यान से देखते हुए):लेकिन यह तो हमारे होटल की नहीं है

पिता: बेटा, अमेरिका में 15 साल के बच्चे भी अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं।

बेटा: लेकिन पापा, भारत में तो 1 साल का बच्चा भागने भी लगता है।

सोनू: यार मेरे मन में एक सवाल बहुत दिनों से घूम रहा है।

मोनू: कैसा सवाल?

सोनू: दूधवाले हड़ताल करते हैं तो दूध सड़क पर फेंकते हैं, टमाटर वाले हड़ताल करते हैं तो टमाटर सड़क पर फेंक देते हैं, न जाने बैंक को कब अक्ल आएगी।

गर्लफ्रेंड: हेलो, कहां हो?

बॉयफ्रेंड: मोटिवेट कर रहा हूं।

गर्लफ्रेंड: किसे?

बॉयफ्रेंड: किसे का क्या मतलब, तुम्हारा वेट कर रहा हूं मोटी।

बेटा: पापा, बुलेट दिला दो।

पिता: शर्माजी की लड़की को देख, वह भी बस से जाती है।

बेटा: बस यही तो देखा नहीं जाता।

<u>विज्ञान के खेल - तैरता चुम्बक</u>

लेखक - गाओरी शिवा

सामग्री - एक चुम्बक, थर्मोकोल, पानी से भरा एक टब.

गतिविधि - एक चुम्बक को थर्मोकोल में चित्र के अनुसर चिपका दें. इसके बाद उसे पानी से भरे टब में तैरा दें. कुछ देर में यह चुम्कब उत्तर-दक्षिण दिशा में हो जाता है. यदि चुम्बक को हिलाया-डुलाया जाये तो भी यह वापस अपनी उसी स्थिति में आ जाता है.

कारण - ऐसा पृथ्वी के चुम्बकत्व के कारण होता है. पृथ्वी का चुम्बकीय उत्तरी ध्रुव भौगोलिक दक्षिणी ध्रुव के नजदीक है और चुम्बकीय दक्षिणी ध्रुव भौगोलिक उत्तरी ध्रुव के पास है. पृथ्वी के चुम्बकत्व के कारण चुम्बक सदा उत्तर-दक्षिण दिशा में रहता है. इसी गुण के कारण चुम्बक का उपयोग कम्पास में भी किया जाता है.

भाखा जनउला

रचनाकर - दीपक कंवर

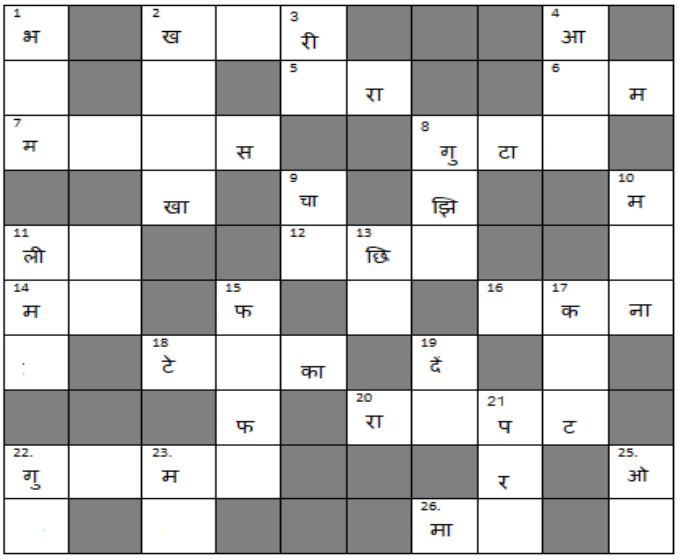

बाएँ से दाएं - 1. शंका 2. काँख 5. ताला 6. धूप 7. शहद 8. हथौड़ी 11. नीम 12. गाय का बच्चा 14. मामा 16. खटमल 18. गिरगिट 20. झापड़ 21. धान की एक किस्म 26. मक्खी

ऊपर से नीचे - 1. शंका 3. खाली 4. भरा पेट 8. मीठा व्यंजन 9. काट 10. कद्दू 11. नींबू 13. सीताफल 15. मोटरसायकल 17. दरवाजा 19. शरीर 21. बरामदा 22. मांस 23. मट्ठा 25. झोली

उत्तर